विश्व न्याय मन्दिर

यदि किसी क्लस्टर में विस्तार और सुगठन की जिम्मेदारी उठाने वालों की संख्या दसियों में है और सामुदायिक जीवन की गतिविधियों में कुछ सैंकड़ों भाग ले रहे हैं, तो इन दोनों आंकड़ों में उल्लेखनीय रूप से वृद्धि होनी चाहिये ताकि योजना के अंत तक, सौ या दो सौ व्यक्ति, एक या दो हजार व्यक्तियों की सहभागिता में सहयोग दे रहे हों।

28 दिसम्बर, 2010

मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 54 अंक 7 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख
जुलाई 2018 बहाई वर्ष : 175

पुणे में स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों के लिए सम्मेलन

पुणे के बहाई भवन में महाराष्ट्र एवं गोवा की स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों के लिए 12 और 13 मई, 2018 को वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इसमें 11 स्थानीय सभाओं के लगभग 30 मित्रों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की।

सम्मेलन का आरम्भ प्रार्थनाओं से हुआ। उसके उपरान्त विश्व न्याय मन्दिर के रिज़वान संदेश–2018 का गहनता से अध्ययन किया गया। विभिन्न विषयों जैसे– द्विशताब्दी समारोह और समुदाय पर उसका प्रभाव, राष्ट्रीय स्तर पर प्रभुधर्म का उद्‌भव, जीवंत समुदाय की परिभाषा, कैसे संस्थान प्रक्रिया समुदायों को व्यापक दृष्टि से सशक्त बना रही है, समुदाय निर्माण के काम की तीव्रता, सामाजिक कार्य के लिए समुदाय की बढ़ी हुई क्षमता, इंटरनेट पर होने के कारण प्रभुधर्म की स्थिति पर असर, मशरिकुल–अजकार की संस्थान का उद्‌भव, आने वाली योजनायें और कार्यक्रम आदि पर चर्चा की गई।

विभिन्न समुदायों ने अपने क्षेत्रों में चल रही गतिविधियों की जानकारी दी। सतारा और मालेगांव आध्यात्मिक सभा ने अपने क्षेत्र में होने वाली गतिविधियों के बारे में बताया कि वहाँ पर गतिविधियाँ बढ़ रही हैं और उन्हें बनाये रखने के लिए सभायें प्रयास कर रही हैं। क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन को देखते हुए स्थानीय गणमान्य व्यक्तियों ने इन गतिविधियों की प्रशंसा की।

दोपहर के भोजनोपरान्त स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं से संबंधित विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। विश्व न्याय मन्दिर के 29 दिसम्बर 2015 के संदेश के गद्यांशों का अध्ययन किया गया।

पुणे और पंचगणी के मित्रों ने साझा किया कि स्टडी सर्कल के प्रतिभागियों पर प्रोत्साहन का क्या प्रभाव पड़ रहा है और प्रतिभागी कैसे संस्थान प्रक्रिया में उत्साहपूर्वक भाग लेकर उसका स्वामित्व ले रहे हैं।



पुणे में आयोजित सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागी

शाम को लगभग 27 प्रतिभागियों ने 3 पड़ोसी क्षेत्रों– नागपुरचॉल, रामटेकडी और सुलु का भ्रमण किया। कुछ मित्रगण पुणे बहाई भवन के नजदीक प्रत्यक्ष शिक्षण के लिए गए। इस भ्रमण के परिणामस्वरूप 7 प्रतिभागियों के साथ एक स्टडी सर्कल और 18

शेष पृष्ठ 4 पर

इस अंक में

राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के पदाधिकारी

निम्नलिखित मित्रों को वर्ष 2018–2019 के लिए भारत की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा के पदाधिकारियों के रूप में सेवा करने के लिए निर्वाचित किया गया है :

1. श्री लतीफ रशीद – अध्यक्ष
2. सुश्री नाज़नीन रौहानी – महासचिव
3. डॉ. नेसन ओल्याई – कोषाध्यक्ष
4. श्रीमती ज़ीना सोराबजी – उपाध्यक्ष



राष्ट्रीय अधिवेशन में शामिल होने वाले प्रतिनिधिगण और सलाहकार श्री दृगपाल सिंह

झारखण्ड में रूही पुस्तक अभियान

4, 6 और 7 जून 2018 को क्रमशः चांडिल क्लस्टर स्थित रुचाप–2 समुदाय में 13 मित्रों के साथ, पटमदा क्लस्टर स्थित कुम्हीर समुदाय में 8 मित्रों के साथ और आसनबनी क्लस्टर स्थित साहीझरना समुदाय में 7 मित्रों के साथ पुस्तक–1 (दिव्य जीवन–एक चिंतन) का अध्ययन किया गया। पुस्तक के अध्ययन के दौरान मित्रगण बहाई पवित्र लेखों का दैनिक जीवन में महत्व, प्रार्थना का महत्व और जीवन–मृत्यु की अवधारणा से परिचित हुए। अध्ययन की समाप्ति के उपरांत पुस्तक के सेवा कार्य को समझते हुए तीनों क्लस्टरों के लगभग सभी मित्रों ने अपने घरों में भक्तिपरक सभाओं का आयोजन भी किया।

2 से 6 जून 2018 को क्रमशः पटमदा क्लस्टर स्थित बारूबेड़ा समुदाय में 15 मित्रों के साथ, 4 जून 2018 को चांडिल क्लस्टर स्थित रुचाप–2 समुदाय में 15 मित्रों के साथ और 25 मई 2018



आसनबनी क्लस्टर में रूही पुस्तक–1 को पूर्ण करने वाले प्रतिभागी

शेष पृष्ठ 3 पर

शहादत दिवस की स्मृति में

दिव्यात्मा बाब

गर्मी की एक दोपहरी, लोगों से खचाखच भरा तबरीज़ का चौराहा, हर गली–नुक्कड़, छत और खिड़कियों से झांकते चेहरे। सेना की टुकड़ी का नेतृत्व कर रहे व्यक्ति ने गोली चलाने का आदेश दिया। आदेश मिलते ही तीन कतारों में खड़े सैनिकों ने अपनी बंदूकें तानीं और उन असहाय कैदियों पर निशाना साधा। दूसरा आदेश तीन बार ताली बजाकर दिया गया और 750 बंदूकों ने उन दो कैदियों के सीनो पर गोलियों की बौछार कर दी। धुएं से पूरा आसमान भर गया। वहाँ खड़े लोग स्तब्ध, धुआं छटने की राह देखने लगे। धीरे–धीरे धुआं छटा और सारे लोग जैसे हतप्रभ् रह गये। उन्हें उम्मीद थी कि टुकड़ों में दो निर्जीव शरीर मिलेंगे, गोलियों से उनकी देह छलनी हो गई होगी, लेकिन आश्चर्य, घोर आश्चर्य–एक कैदी बिना आहत हुए वहां खड़ा था और दूसरा कैदी कहीं नजर नहीं आया। जैसे अपनी ही आंखों पर भरोसा ना हो, जैसे अपनी ही जुबान बंद हो गई हो, जैसे अपने ही दिल ने धड़कना छोड़ दिया हो।

यह कोई पौराणिक कथा नहीं है, ना ही कोई अतिशयोक्ति। यह नाटकीय कल्पना भी नहीं है, बल्कि एक घटना है जिसका आधिकारिक विवरण प्रत्यक्षदर्शियों, तत्कालीन पदाधिकारियों और इतिहासकारों ने प्रस्तुत किया है। इस घटना के मुख्य पात्र शिराज के सैयद अली मुहम्मद थे, जो बाब के नाम से जाने गये और मिर्जा मुहम्मद अली जुम्जी, जो अनिस के नाम से जाने जाते थे। गोलियाँ दागने वाली टुकड़ी नसीरूद्दीन शाह और उनकी सेना के प्रमुख कर्नल साम खान की ईरानी सेना की अमेरिकी रेजिमेंट थी।

जिस दिन बाब को मौत के घाट उतारा जाना था उस सुबह जेलर ने जब उन्हें तबरीज़ के चौराहे पर लाने के लिए एक अधिकारी को भेजा था तब बाब अपने एक अनुयायी से बातें करने में मशगूल थे। उस अधिकारी ने जब बातचीत में व्यवधान डाला तब बाब ने उससे कहा, ''तब तक नहीं, जब तक मैं अपनी बातें पूरी न कर लूं। मैं जो कुछ भी कहना चाहता हूँ उसे पूरा करने से पहले धरती की कोई भी ताकत मेरी जुबान बंद नहीं कर सकती। अगर दुनिया की सारी ताकतें भी मेरे विरूद्ध खड़ी हो जायें तब भी मेरे उद्देश्य की पूर्ति के पहले वे शक्तिविहीन हो जायेंगी।'' उन्हें बैरक के चौराहे पर ले जाया गया जहाँ सेना की टुकड़ी उनका इंतजार कर रही थी। मृत्युदण्ड की सारी तैयारियाँ पूरी हो चुकी थीं। ईसाई कर्नल साम खान ईश्वर के दण्ड से भयभीत बाब तक गया और उसने उनसे क्षमा याचना की। बाब ने कहा, ''तुम आदेश का पालन करो और अगर तुम सत्यनिष्ठ हो तो निश्चित रूप से ईश्वर तुम्हारी दुविधा से तुम्हें मुक्ति देगा।'' साम खान ने आदेश दिया और गोलियों की आवाज से तबरीज़ का चौराहा गूंज उठा। जब धुआं छंटा तब पता लगा कि केवल वो रस्सी जली थी जिससे उन दो कैदियों को बांध कर लाया गया था। अनीस गोलियों से अछूता निर्भीक खड़ा था और बाब का कोई पता नहीं था। भीड़ स्तम्भ थी और कैदी की कही बातें उनके कानों में गूंज रहीं थीं। जेलर और कर्नल, दोनों ने अपने पद त्याग दिये और इस प्रकार उस अमरीकी टुकड़ी ने ऐसे घृणित कार्य को करने से इन्कार किया। ईश्वर की इच्छा से वह गोलियों के शिकार नहीं हुए और अपने कमरे में अधूरी पड़ी बातों को पूरा करते हुए पाये गये। सेना के अधिकारी जब उन्हें तलाशते हुए उनके पास पहुंचे तब बाब ने कहा, ''मैंने अपनी बातें पूरी कर ली हैं। अब तुम अपना काम करो।'' इस बार ईसाई टुकड़ी की जगह मुस्लिम सेनाओं की टुकड़ी थी और इस टुकड़ी ने अपना काम पूरा किया। पवित्र हदीथ का कथन सत्य हुआ। बाब की मृत्यु मुसलमानों के हाथों हुई। बाब के अन्तिम शब्द थे, ***''हे भ्रमित पीढ़ी के लोगों ! अगर तुमने मुझ में विश्वास किया होता तो तुममें से प्रत्येक ने इस युवा के उदाहरण का अनुसरण किया होता और मेरी राह में खुद को स्वेच्छा से कुर्बान कर दिया होता। वह दिन आयेगा जब तुम मुझे पहचानोगे, लेकिन उस दिन मैं तुम्हारे पास नहीं होऊँगा।''***

सिक्किम एवं दार्जिलिंग की स्थानीय सभाओं के पदाधिकारियों के लिए कार्यशाला

सिक्किम एवं दार्जिलिंग परिषद ने इस वर्ष चुनी गईं 15 स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के पदाधिकारियों के लिए 2 और 3 जून, 2018 को दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन पेंडम क्लस्टर सुविधा भवन में किया। इस कार्यशाला में 9 स्थानीय सभाओं के 27 प्रतिभागियों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की।

कार्यशाला के पहले दिन विश्व न्याय मन्दिर के रिज़वान संदेश 2018 का अध्ययन किया गया। फुलवाड़ी से लिए गए विषय 'स्थानीय सभाओं के पदाधिकारियों की भूमिका' पर सुबह और दोपहर के सत्र के दौरान समूह में चर्चा की गई। इस अध्ययन सामग्री ने स्थानीय सभाओं के पदाधिकारियों को उनकी भूमिका के बारे में जानने में मदद की ताकि वे अपने क्लस्टर में वापस जाकर अपने कार्य में परिष्करण ला सकें। इसमें उन्नीस दिवसीय सहभोज मनाने का सत्र भी शामिल था, मित्रों को यह जानकर अच्छा लगा कि अलग–



कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रतिभागी

अध्ययन करने के दौरान मित्रों ने द्विशताब्दी समारोह से लेकर पीजी से आईपीजी तक पहुंचने वाले क्लस्टरों की स्थिति, बाब के द्विशताब्दी समारोह की तैयारियाँ, सामाजिक कार्य, बहाई वेबसाइट और बहाई संदर्भ पुस्तकालय का उपयोग, आगामी बहाई मंदिरों के बारे में जानकारी, अब्दुलबहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी पर वर्तमान पाँच वर्षीय योजना की समाप्ति इसके साथ–साथ अनेक मार्गदर्शन प्राप्त किये। इस संदेश ने सभी को अचंभित कर दिया और उन्होंने अपनी स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्यों और समुदाय के साथ इसका अध्ययन करने की योजना बनाई।

दूसरा दिन सुंदर प्रार्थनाओं और पवित्र लेखों के अध्ययन से शुरू हुआ। उसके उपरान्त नई अलग समूहों में उन्नीस दिवसीय सहभोज कैसे मनाया जाता है और यह क्लस्टर में विकास और मित्रों के बीच संबंध बनाये रखने के लिए नियमित रूप से मनाया जाना क्यों महत्वपूर्ण है।

इस सामग्री के अंत में परिषद को मिनिट्स और अन्य पत्राचारों को भेजने का महत्व शामिल था। शाम के सत्र में बहाई कोष पर भी चर्चा की गई।

यह दो दिवसीय कार्यशाला उपयोगी साबित हुई और जिन मित्रों ने इसमें भाग लिया वे अपने साथ बहुत–सी सीख और यादें लेकर लौटे। अंत में, उपस्थित सभी सहायक मण्डल सदस्यों का धन्यवाद किया गया, जिन्होंने विभिन्न प्रकार से इस कार्यशाला में अपना सहयोग प्रदान किया।

निवेदन

मित्रों, अपने समुदायसमूह में होने वाली मूल गतिविधियों की रिपोर्ट तथा प्रेरणादायक घटनायें फोटोग्राफ के साथ हमें समय–समय पर भेजते रहें, जिससे की हम उन्हें अपने बहाई समाचारपत्र में प्रकाशित कर सकें।

धन्यवाद !

बहाई विवाह



स्थानीय आध्यात्मिक सभा के सदस्य श्री मिक्मा लामा का विवाह सुश्री अर्पणा दुक्पा के साथ दार्जिलिंग क्षेत्र के कुर्सियांग सिंगेल में 24 जून, 2018 को बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



महाराष्ट्र के श्री सुभाष कांबले और सुश्री अनुराधा कांबले का विवाह 14 जून, 2018 को इचलकरंजी में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



अहमदनगर के श्री साबा होसेनी और इंदौर की सुश्री शिखा कुमार का विवाह 3 जून, 2018 को इंदौर में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।

झारखण्ड में रूही पुस्तक अभियान

पृष्ठ 1 का शेष

को आसनबनी क्लस्टर स्थित आसनबनी समुदाय में 30 मित्रों के साथ पुस्तक–2 (सेवा का संकल्प) का अध्ययन किया गया। पुस्तक के अध्ययन के दौरान मित्रगण प्रभुधर्म का संदेश देने का आनंद, सुगठन के विषय, बहाई मान्यताओं से परिचय–जैसी अवधारणाओं से परिचित हुए। पुस्तक के अध्ययन के साथ–साथ मित्रों ने तीन दिनों तक सुगठन के विषय जैसे–संविदा, बहाउल्लाह का जीवन, प्रेम, एकता, 19 दिवसीय सहभोज और दान के महत्व के आधार पर तीनों क्लस्टरों ने लगभग 45 बहाई परिवारों का दृढ़ीकरण भी किया।

31 मई 2018 को पटमदा क्लस्टर स्थित बारूबेड़ा समुदाय में 5 मित्रों के साथ और 20 मई 2018 को आसनबनी क्लस्टर स्थित आसनबनी समुदाय में 8 मित्रों के साथ पुस्तक–5 (किशोर ऊर्जा को उजागर करना) का अध्ययन पूर्ण किया गया। पुस्तक के अध्ययन के दौरान मित्रों ने किशोर अवस्था का महत्व, किशोरों के प्रति बाहरी दुनिया का दृष्टिकोण तथा बहाई समुदाय का दृष्टिकोण में अंतर तथा कैसे वे अपनी ऊर्जाओं का उपयोग एक बेहतर समाज के निर्माण में करे जैसी अन्य अवधारणाओं से परिचित हुए। पुस्तक की समाप्ति पर सभी ने अपना एक किशोर समूह स्थापित करने का भरोसा दिया।



चांडिल क्लस्टर में रूही पुस्तक–2 को पूर्ण करने वाले प्रतिभागी



पटमदा क्लस्टर में रूही पुस्तक–5 को पूर्ण करने वाले प्रतिभागी

एक अनुभव

उत्तर प्रदेश के साराय्या बंथरा क्लस्टर से एक अनुभव साझा करते हुए प्रसन्नता हो रही है। कुछ दिनों पहले बंथरा के आंगनबाड़ी केन्द्र में रूही पुस्तक–1 का अध्ययन आरम्भ किया गया था, जिसमें लगभग 20 महिलाओं ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की थी। अत्याधिक गर्मी होने के कारण सभी ने निर्णय लिया कि हर दिन किसी–न–किसी महिला के घर पर कक्षा का आयोजन किया जायेगा। इसलिए उस दिन समूह की एक महिला के घर पर कक्षा रखी गई। सभी महिलायें कक्षा में भाग लेने के लिए उस महिला के घर पर पहुँच गई लेकिन एक महिला वहाँ नहीं गई क्योंकि उनके परिवारों के बीच पहले से ही कुछ लड़ाई–झगड़ा चल रहा था इसलिए वे एक–दूसरे के घर पर आते–जाते नहीं थे। कुछ दिन बाद जब रुही पुस्तक का अध्ययन समाप्त होने वाला था, तो उसी महिला के घर पर प्रार्थना बैठक थी और उसने सभी महिलाओं को आमंत्रित किया और प्रार्थना सभा की तैयारी करने के लिए अपने घर पहुँच गई। तब दूसरी महिला जिनमें आपस में झगड़ा चल रहा था उसने अन्य महिलाओं से चर्चा की कि मैं कैसे उसके घर पर जा सकती हूँ वह मेरी दुश्मन है। तभी उसने शिक्षक और अन्य महिलाओं से पूछा मुझे क्या करना चाहिए। हर किसी ने कहा कि यह आप पर निर्भर है यदि आप नहीं जाना चाहती तो आपकी मर्जी, लेकिन हम सीख रहे हैं कि कैसे एकजुट होना है, और हम एक–दूसरे से प्यार करते हैं, इसलिए आप तय करें कि आपको क्या करना है। फिर उस महिला ने कहा कि यदि मैं उसके घर पर गई और उसने मेरे साथ बुरा व्यवहार किया तो, सभी ने कहा कि चिंता न करें वे सब भी तो उसके साथ जा रहे हैं। सभी महिलाएं प्रार्थना के लिए गईं। प्रार्थना समाप्त होने के बाद जिसके घर प्रार्थना थी उसने दूसरी महिला से कहा कि मैं भी आपके घर आऊंगी क्योंकि आप मेरे घर आई हो। इस प्रकार रूही पुस्तक के अध्ययन और प्रार्थना सभा के प्रभाव से दो परिवारों में काफी समय से चली आ रही दुश्मनी समाप्त हो गई। दोनों महिलायें प्रार्थना सभा के कारण बहुत खुश थीं।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204 | Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
New Delhi P.S.O. | Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2018-19-20

स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के लिए असम में बैठक का आयोजन

क्षेत्रीय बहाई परिषद असम, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय एवं नगालैंड ने नवनिर्वाचित स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के लिए 12 और 13 मई को एक बैठक का आयोजन किया। में तीव्रता लाने की भूमिका पर अध्ययन किया गया। इन अंतर्दृष्टिपूर्ण परामर्शों ने नियोजन प्रक्रिया को निर्देशित किया, जिसका उद्देश्य अपने समुदायों को एकजुट कार्य, सामूहिक उपासना और



असम में आयोजित बैठक में भाग लेने वाले प्रतिभागी

इस बैठक में एक सहायक मण्डल सदस्य के अलावा नौ स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के 29 सदस्य शामिल हुए, जिन्होंने अपने क्लस्टरों का प्रतिनिधित्व किया। रिज़वान संदेश से प्रेरणा प्राप्त की गई और प्रत्येक आध्यात्मिक सभा के समर्थन, मार्गदर्शन और जहाँ वे सेवा दे रहे हैं वहाँ समुदाय निर्माण की प्रक्रिया मानवता के लिए सेवा की भावना से प्रेरित करना है।

प्रतिभागियों ने "विश्व के पथप्रदर्शक" फिल्म को एक बार फिर से देखा और फिल्म की महत्वपूर्ण अवधारणाओं पर चर्चा की, जिसने बहाउल्लाह के जीवन और दृष्टिकोण को समझने में मदद की।

पुणे में स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों के लिए सम्मेलन

पृष्ठ 1 का शेष

प्रतिभागियों के साथ 4 भक्तिपरक बैठकें आरम्भ हुईं तथा अभियान के लिए 34 मित्रों की पहचान की गई।

अगले दिन की सुबह पुणे स्थानीय आध्यात्मिक सभा द्वारा प्रातःकालीन प्रार्थना का आयोजन किया गया, जिसमें 23 मित्रों ने भाग लिया। उसके उपरान्त मित्रों ने स्थानीय सभाओं के कार्यों पर अपना अध्ययन जारी रखा। सभाओं का कर्तव्य, समुदाय निर्माण, संस्थान प्रक्रिया जैसे विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई। साथ ही, प्रतिभागियों ने यह भी जाना कि सभाओं को दृढ़ कैसे करें और जीवन के आध्यात्मिक, भौतिक और सामाजिक पहलुओं के बीच संतुलन कैसे प्राप्त किया जाये।

सांख्यिकी आंकड़ों को अपडेट करने और उन्हें एकत्रित करने के महत्व के बारे में भी प्रतिभागियों को बताया गया जो प्रभावी योजना बनाने में मदद करते हैं।

स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं के सदस्यों के लिए कोष पर भी एक सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें सतारा, कल्याण और भिवंडी की सभाओं के सदस्यों ने कोष पर अपने–अपने अनुभवों और चुनौतियों को साझा किया। मित्रों ने बताया कि वे किस प्रकार अपने क्षेत्र में अनुयायियों को कोष के प्रति जागरूक करने के लिए प्रयासरत हैं।

कोष सम्वर्धन प्रभाग से

बहाई कोष

भगवद् कार्य हेतु सेवा हमारे बहाई जीवन का हृदय है और धर्म के कोष में अंशदान करना वास्तव में इस सेवा का एक महत्वपूर्ण भाग है। कोष में दान देना स्वतः आशीर्वादित सौन्दर्य के साथ हमारी संविदा शक्ति का सूचक है। जब हम अंशदान करते हैं, तब अपने परमप्रिय प्रभु के महत्वपूर्ण नियमों में से एक का हम वास्तव में पालन करते हैं एवं धर्म के प्रति अपनी भक्ति एवं आसक्ति को व्यक्त करने का एक अवसर प्राप्त करते हैं।

दान देने की लगन

भारत के बहाई उपासना मंदिर के निर्माण के समय पहला योगदान समोआ से बच्चों की बहाई कक्षा से आया, जिस समय उधर भी मन्दिर का निर्माण कार्य चल रहा था।

अन्य देशों को भारत में बहाई मंदिर के निर्माण की सूचना उनके समाचारपत्र के द्वारा प्राप्त हुई, पहले तो बूँद के समान फिर तेज वेग से अनेक बहाई शुभकामनाओं के संदेशों के साथ पैसा आना आरम्भ हो गया। चाहे वह बड़े शहर हों या दूर–दराज के ग्रामीण क्षेत्र विश्व के कोने–कोने से जहाँ भी बहाई थे, वहाँ से एक अन्य मशरिकुल–अज़कार के निर्माण कार्य के लिए अपना योगदान भेजने लगे। लोगों ने अपनी बहतरीन एकता का प्रदर्शन किया और सिद्ध कर दिया कि वह एक ही परिवार के सदस्य हैं।

उस समय ईरान में बहाईयों के ऊपर बहुत अत्याचार हो रहे थे, वे अपना योगदान भेजने में असमर्थ थे, लेकिन अन्य देशों के अनेक अनुयायियों ने उनकी ओर से उदारतापूर्वक दान दिया। ईरान में बहाई धर्म पर अपना जीवन बलिदान करने वाले लोग प्रेरणा के महान स्रोत रहे और उनके नाम पर योगदान प्राप्त किया गया।

भारत का अपना योगदान भी पूरे देश से आया। भारत में तीन हजार समुदाय थे जहाँ बहाई रहते थे और उनमें से कुछ गरीबी रेखा से नीचे के गाँव थे। इस प्रकार के बारह गांव पश्चिम बंगाल में स्थित थे, स्थानीय आध्यात्मिक सभाओं ने मशरिकुल–अज़कर के लिए दान का एक लक्ष्य रखा प्रत्येक से एक रुपये एकत्रित करने का और उसको पूरा किया। बारह रुपये का यह योगदान एकत्रित अन्य योगदानों में सबसे अधिक हृदयस्पर्शी था। कुछ लोग जिनके पास पैसे नहीं थे उन्होंने अनाज जैसे चावल और गेहूँ या फिर हाथ से बनी हुई वस्तुएँ और जो भी उनके पास था वह सब दान में दिया। आदिवासी क्षेत्र के एक बहाई ने हाथ से बुनी हुई टोकरी दी, एक अन्य ने नक्काशी करा हुआ महानतम नाम अपनी ओर से दिया।

एक भारतीय विद्वान जिन्होंने बहाई उपासना मंदिर का भ्रमण किया उन्होंने कहा, *"ताजमहल राजा की शक्ति से बना था, परन्तु आप यह विभूतिमान महल प्रेम की शक्ति से बना रहे हैं।"*

जहाँ तक प्रभुधर्म के हित के लिये भौतिक त्याग करने का संबंध है उन्होंने यह कामना प्रकट की है कि आप यह समझ लें कि प्रभुधर्म के सामान्य हित व्यक्ति विशेष के हितों से पहले आते हैं। उदाहरण के लिए किसी व्यक्ति के लिए योगदान का स्थान राष्ट्रीय तथा स्थानीय कोषों और मंदिर कोष के लिए योगदान के बाद ही आता है।

कुल पृष्ठ संख्या–4

बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
रजि नं. : DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2018-19-20
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2018-19-20
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110020
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.7. 2018
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा श्री मंगलम प्रिंटर्स, एफ–25, ओखला औद्योगिक क्षेत्र, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कुमार)